सखी महिमा–

नास्तिक हैं जे लोग कहॉ जाने निज रूपै,
प्रगट भानू कौ छाड़ गहत पर छायी धूपै,
हमरे तो यह रूप बिन और ना कछु सुहात,
जो कर तल आ मलक के कोटिक ब्रहम दिखाये।
सखा सुन श्याम के, सखा सुन श्याम के।

सखी प्रियंका–अब और कछु मत कहौ इनसौं। उद्धव जी ये कान श्यामसुन्दर के सिवाय और कछु नाए सुननौ चाहै हैं, ये नैन श्यामसुन्दर के सिवाय और कछु देखवौ नाए चाहे हैं।

श्याम तन श्याम मन, श्याम ही हमारो धन,
आठों याम उधौ हमें, श्याम ही सौ काम है,
श्याम हिये श्याम जिये, श्याम बिनु नाहीं तिये,
आंधे की सी लाकड़ी आधार श्याम नाम है,
श्याम गति श्याम मति श्याम ही है प्राणपति,
श्याम सुखदायी सौ भला ही शोभा धाम है,
उधौ तुम भये बौरे, पाती लैके आये दौरे,
जोग कहॉ राखि यहॉ रोम रोम श्यामह ै।

उद्धव–गोपियों ये तौ असम्भव बात है। वा परब्रहम सौ मिलवौ इतनौ सरल थोडे ही है। याके लिए तौ अष्टांग योग, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि करवे के उपरान्त तबही वा कृष्ण की प्राप्ति होयेगी।

सखी प्रार्थना–हे उद्धव जी कहा अष्टांग योग, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि इनके बिना वा कन्हैया की प्राप्ति नाए है सके।

उद्धवजी–अरी गोपियों तुम तौ असम्भव बातें सम्भव करनौ चाहौ हौ। बिना बादलन के बरसात करानौ चाहौ हौ।

सखी प्रियंका–अजी उद्धव जी या असम्भव कू हम सम्भव करकै दिखायें दें तौ बिना बादलन के बरसात करायें दें तौ आप हमारी बात मान जाओगे हमारे रंग में रंग जाओगे।

उद्धवजी–अरी गोपियों ये तौ कदापि नहीं है सकै है। बिना योग के कन्हैया की प्राप्ति तौ सम्भव ही नहीं है। और यदि बिना योग के वो कन्हैया यहॉ प्रकट है गयौ तौ ये उद्धव तुम सब गोपिन के आगे नतमस्तक हैके साष्टांग प्रणाम करैगौ।

सखी प्राची–अच्छा उद्धव जी अब नैक आप अपने नेत्रन कू तौ बन्द करौ।

उद्धवजी–लेओ गोपियो नेत्रन नै बन्द करवे में मेरो का जा रहयौ है। हैं यह कहा आश्चर्य, जिन परम ब्रहम परमात्मा कू योग सौ प्राप्त कियौ जाये है वह तौ प्रेम के कारण क्षण भर में प्रकट है के जे कहा लीला कर रहे हैं।

ब्रहम में ढूढ़यौ पुरानन गानन वेद रिचा परी चौगुनी चायन,